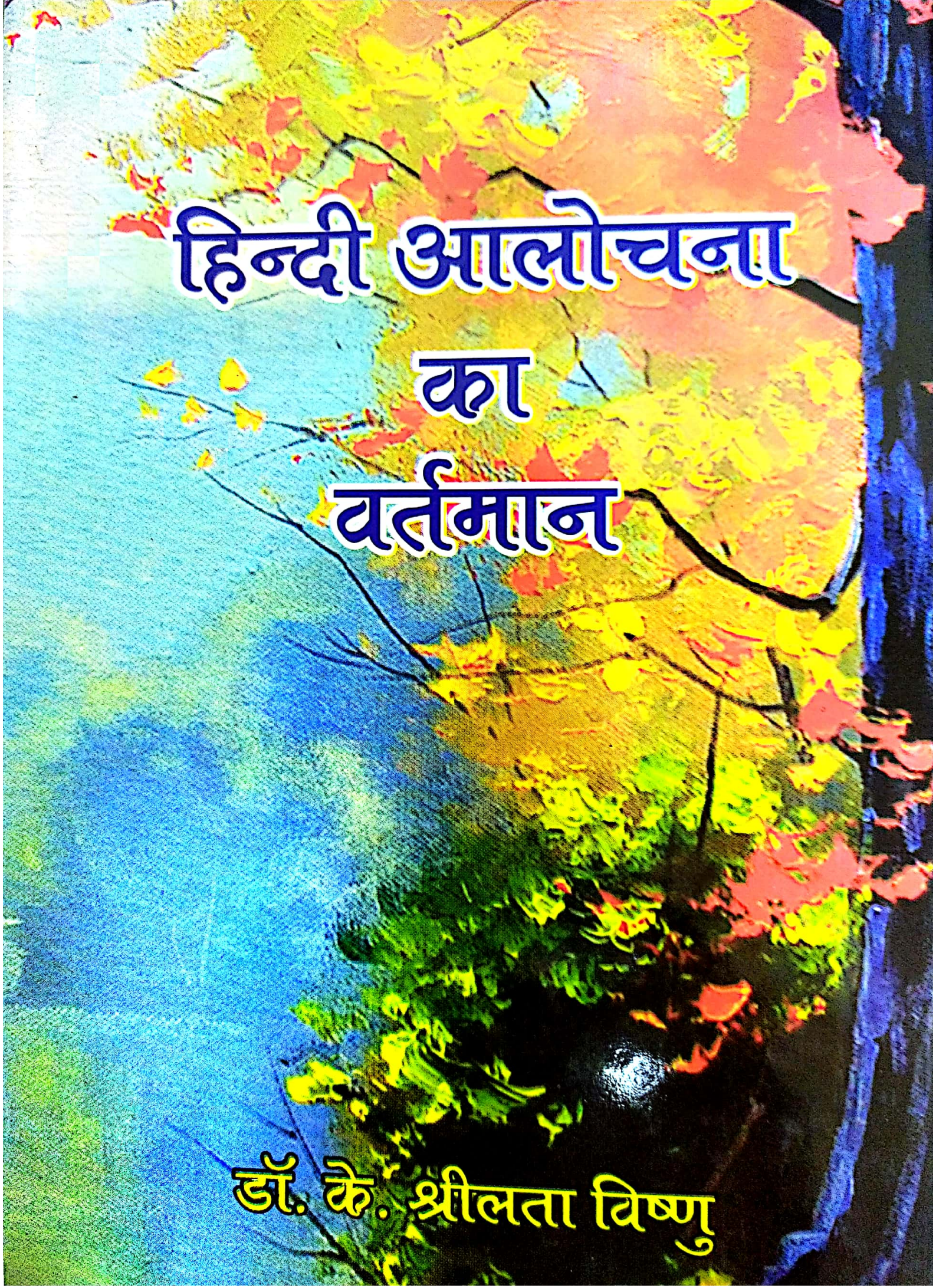


Scanned by CamScanner

HINDI AALOCHANA KA VARTMAN
Edited by : Dr. K. Srilatha Vishnu
Rs. Four Hundred Fifty only

**ISBN :** 978-93-85389-40-5

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक | : | हिन्दी आलोचना का वर्तमान |
| संपादिका | : | डॉ. के. श्रीलता विष्णु |
| प्रकाशक | : | अमन प्रकाशन<br>104A/80C रामबाग, कानपुर – 208012<br>Ph. 0512-2543480 (Off.)<br>0512-2543480 (Fax)<br>Mob. 09839218516, 08090453647 |
| संस्करण | : | प्रथम, 2015 |
| © | : | संपादिकाधीन |
| मूल्य | : | ₹ 450.00 मात्र |
| शब्द–सज्जा | : | रिचा ग्राफिक्स, नौबस्ता, कानपुर |
| मुद्रक | : | साक्षी आफसेट, यशोदा नगर, कानपुर |


Scanned by CamScanner

# अनुक्रम


1. समकालीन हिन्दी आलोचना : एक विहंगावलोकन — 15
   -डॉ. रामप्रकाश
2. आलोचना का दायित्व और समकाल — 33
   -हरपाल सिंह अरुष
3. इक्कीसवीं सदी का समय और हिन्दी कविता — 41
   -डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र
4. आलोचना के नए प्रतिमान : 'सैबर आलोचना' का परिप्रेक्ष्य — 51
   -डॉ. सी. जयशंकर बाबु
5. आलोचना का भविष्य और भविष्य की आलोचना — 65
   -डॉ. मनोज पाण्डेय
6. आलोचना : इस समय — 75
   -श्रीराम त्रिपाठी
7. उत्तर आधुनिक विमर्श — 83
   -डॉ. के. वनजा
8. दलित आलोचना : एक झांकी — 88
   -डॉ. सी. जे. प्रसन्नकुमारी
9. साहित्यध्ययन की गाँधी दृष्टि और उसकी जरूरत — 92
   -डॉ. पी. रवि
10. हिन्दी आलोचना के विविध आयाम — 97
    -डॉ. पी. लता
11. हिन्दी आलोचना की आलोचना — 106
    -डॉ. पी. श्रीलता
12. हिन्दी की समाजशास्त्रीय आलोचना — 115
    -डॉ. पी. एच. इब्राहिम कुट्टि


Scanned by CamScanner

9

# साहित्यध्ययन की गांधी-दृष्टि और उसकी जरूरत

-डॉ. पी. जी

साहित्य का अध्ययन संवेदना के आधार पर चलता तो है, परन्तु उसमें [illegible] व साहित्यिक कृति के प्रति हम सौ प्रतिशत न्याय नहीं कर सकते हैं, क्योंकि कृति के उद्देश्य को व्यक्त कर पाने में असमर्थ होते हैं। यह इसलिए है कि श्रेष्ठ कृति सिर्फ कलावादी नहीं, उसकी तह में एक प्रबल जीवन दर्शन भी होते हैं। समकालीन साहित्य सौन्दर्य की अपेक्षा अधिक सामाजिक जीवन की आलोचना है, उसका इतिहास है। कहने का मतलब यह है कि आलोचना मात्र इन्द्रियबोध एवं मनोबोध से नहीं उससे बढ़कर विचारबोध पर केन्द्रित होती है। वैश्वीकरण, सांप्रदायिकता, पारिस्थितिकी, स्त्री, दलित, आदिवासी जीवन के विभिन्न आयाम समकालीन साहित्य के प्रमुख मुद्दे हैं। इसमें दलित–आदिवासी एवं एक हद तक स्त्री को छोड़कर बाकी मुद्दों की आलोचना के लिए गांधी विचार अधिक प्रासंगिक लगता है। स्त्री विमर्श की चर्चा करते वक्त भी गांधी, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन, नवोत्थान आदि की उपेक्षा करना सही नहीं लगता है। क्योंकि इतिहास यही बता रहा है कि नारी चेतना का जो उभार नवोत्थान–स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हुआ था, 1940-42 के बाद वह भारतीय समाज से गुम हो गया है। लगभग तीन–चार दशक तक नारी चेतना मौन ही रही। तथाकथित उपनिवेशी आधुनिकता के दौरान स्त्री, दलित, आदिवासी, पारिस्थितिकी का उल्लेख कहीं भी नहीं था। फिर सत्तर के बाद या अस्सी के आसपास ही फिर से मुखरित होने लगी है। गांधी जी ने एक बृहत्तर स्त्री समाज को राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन का हिस्सा बना दिया था। दूसरी बात यह है कि गांधी की प्रकृति पुरुष स्वभाव की अपेक्षा स्त्री स्वभाव की है। उनकी दया, करुणा, सहनशीलता इत्यादि गुण स्त्रियों के हैं। गांधीजी ने कला को उद्देश्यपरक मानते हुए लिखा था कि "कला का संबन्ध नीति, हितकारिता, और उपयोगिता से नहीं है, केवल सौन्दर्य से है– यह कहना सौन्दर्य और कला को न समझने जैसा है। सत्य ही ऊँची–से–ऊँची कला और श्रेष्ठ सौन्दर्य है और वह नीति, हितकारिता और [illegible]" [illegible] संदर्भ में प्रश्न उठेंगे कि क्या गाँधी जी

Scanned by CamScanner